International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 03, March 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

21वीं सदी में माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर महात्मा गांधी की शैक्षिक दर्शन का अध्ययन

Goodu Kumar Singh, Research Scholar, Department of Education, Himalayan Garhwal University
Dr. Alka Kumari, Assistant Professor, department of Education, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार

गांधीजी ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का उपयुक्त आधार माना। उन्होंने शिक्षा के साहित्यिक पहलू की तुलना में शिक्षा के चरित्र विकास के उद्देश्य पर अधिक बल दिया। इसलिए, उनकी राय में सभी ज्ञान का अंत चरित्र का निर्माण होना चाहिए। उन्होंने चरित्र को उसके नैतिक और आध्यात्मिक पहलू सहित संपूर्ण व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में माना। चरित्र निर्माण का अर्थ है साहस, दृढ़ विश्वास की शक्ति, धार्मिकता और व्यक्तिगत जीवन में पवित्रता, आत्म–संयम और मानवता की सेवा जैसे नैतिक मूल्यों की खेती। एसीसी गांधीजी के लिए चरित्र और पवित्रता रहित चरित्र के बिना शिक्षा अच्छी नहीं होगी। उनका विचार था कि यदि हम व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करने में सफल होते हैं, तो समाज स्वयं की देखभाल करेगा। शिक्षा की प्रचलित प्रणाली चरित्रोन्मुखी नहीं है, बल्कि सूचना उन्मुख है। यह उपभोक्तावादी है और व्यक्ति को स्वार्थी, आत्मकेंद्रित और निंदक बनाता है। यह तर्क को तेज करता है, लेकिन हृदय को कठोर करता है। यह सत्य, प्रेम, ईमानदारी, नम्रता, करुणा, सहनशीलता और न्याय जैसे बुनियादी मूल्यों पर बहुत कम या कोई जोर नहीं देता है। यह किसी को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक करता है, कर्तव्यों के बारे में नहीं। यह भौतिकवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, और अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करता है। जबकि शिक्षा का प्राथमिक कार्य एक व्यक्ति में सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालना है, छात्रों को लंबे और गूढ़ पाठ्यक्रम के बोझ से दबे और परीक्षा के डर से नैतिक गुणों को प्राप्त करने या अपनी रचनात्मक क्षमता का पता लगाने के लिए बहुत कम समय मिलता है।

प्रमुख शब्द : गांधीजी ने चरित्र निर्माण, शिक्षा, उपभोक्तावादी, शिक्षा, व्यक्तिगत, रचनात्मकता, समाज के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन

परिचय

शिक्षा एक दर्पण है जिसमें संपूर्ण विकास प्रक्रिया अपना प्रतिबिंब पाती है। यह शिक्षा है, जो लोगों की समृद्धि, कल्याण और सुरक्षा और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के स्तर को निर्धारित करती है। शिक्षा व्यक्तिगत रचनात्मकता, समाज के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में बेहतर भागीदारी

की ओर ले जाती है और इसलिए मानव विकास में अधिक प्रभावी योगदान के लिए। शिक्षा एक प्रक्रिया भी है और उत्पाद भी। एक प्रक्रिया के रूप में, शिक्षा किसी और में या अपने आप में सभी गुणों और क्षमताओं को विकसित करने का कार्य करती है और कार्य करती है। एक उत्पाद के रूप में, शिक्षा सीखने, ज्ञान, कौशल, मूल्यों और आदर्शों के माध्यम से प्राप्त की गई कुल राशि है, जो सीखने के परिणाम हैं। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा एक राष्ट्र अपने आप को जो वह है उससे स्वयं को उस रूप में बदल लेता है जिसकी वह आशा करता है। यह वह सामाजिक साधन है जिसके द्वारा हम उसके भाग्य का मार्गदर्शन कर सकते हैं और उसके भविष्य को आकार दे सकते हैं।

विकसित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा को एक आवश्यक उपकरण के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। विकास में शिक्षा की भूमिका इसके तीन कार्यों से संबंधित है। साक्षरता, सूचना और कौशल विकास। सबसे पहले, लोगों को ज्ञान, दृष्टिकोण, मूल्यों और कौशल के व्यापक स्पेक्ट्रम को प्राप्त करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है, जिसे वे बाद में विकसित कर सकते हैं। दूसरे, अन्य जरूरतों को पूरा करने के साधन के रूप में, शिक्षा प्रभावित करती है और बदले में पर्याप्त पोषण, सुरक्षित पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं और आश्रय जैसी अन्य बुनियादी जरूरतों तक पहुंच से प्रभावित होती है। तीसरा, एक ऐसी गतिविधि के रूप में जो अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में पूंजी प्रौद्योगिकी, सेवाओं और प्रशासन के प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित जनशक्ति विकास के परिणामस्वरूप सभी विकास को बनाए रखती है और तेज करती है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि शैक्षिक प्रक्रिया के साथ–साथ समाज के अन्य पहलू भी एक साथ संचालित होते हैं। चूंकि शिक्षा का उद्देश्य व्यवहार के गुणात्मक रूप से बेहतर तरीकों की ओर ले जाना है, समाज के अन्य आयामों में व्यक्तिगत व्यवहार में कोई भी परिवर्तन शिक्षा का परिणाम हो सकता है। इस अर्थ में शिक्षा में कोई भी गुणात्मक सुधार अपने आप में विकास का सूचक है।

भविष्य में कई चुनौतियों का सामना करते हुए, मानव जाति शांति, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के आदर्शों को प्राप्त करने के अपने प्रयास में शिक्षा को एक अनिवार्य संपत्ति के रूप में देखती है। एक ऐसी दुनिया जिसमें सभी आदर्शों को प्राप्त किया जाएगा, लेकिन मानव विकास के गहरे और अधिक सामंजस्यपूर्ण रूपों को बढ़ावा देने और गरीबी, बहिष्कार, अज्ञानता, उत्पीड़न और युद्ध को कम करने के लिए उपलब्ध प्रमुख साधनों में से एक के रूप में (सीखनाः भीतर खजाना, यूनेस्को , 1996)।

भारत में, स्वतंत्रता के बाद से शिक्षा को बहुत महत्व दिया गया है, क्योंकि यह माना गया है कि देश के आर्थिक और समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक विकास आवश्यक है। मानव संसाधन को बेहतर तरीके से विकसित करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि देश में जनसंख्या के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान की जाए। यही कारण है कि देश भर में शैक्षिक सुविधाओं के विस्तार के लिए योजनाएं विकसित की गईं ताकि सभी लोगों को अपनी जाति, वर्ग, लिंग, धर्म या क्षेत्र के बावजूद शिक्षा में भाग लेने का अवसर मिल सके। हालाँकि, इन प्रावधानों के बावजूद, यह देखा गया है कि

शिक्षा का प्रसार एक समान नहीं है और इस क्षेत्र में सभी प्रकार की असमानताएँ हैं। इनमें लैंगिक असमानताएं, क्षेत्रीय असमानताएं, सामाजिक असमानताएं और स्थानिक असमानताएं शामिल हैं।

पाठ्यचर्या के संबंध में मुख्य निष्कर्ष

शिक्षा के नाम पर छात्रों को जो पढ़ाया जाता था, उससे गांधीजी असंतुष्ट थे। उनका विचार था कि पाठ्यक्रम किताबी, सैद्धांतिक और भीड़भाड़ वाला है, बिना समृद्ध और महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान किए। यह परीक्षा पर बहुत अधिक हावी है और इसमें व्यावसायिक और तकनीकी विषयों को शामिल किया जाना चाहिए, जो कि जीवन के बाद के पाठ्यक्रम में छात्र को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काफी आवश्यक हैं। पाठ्यचर्या पुनरीक्षण के संबंध में विभिन्न प्रयासों के बावजूद, वर्तमान स्थिति वांछित दिशा में ज्यादा नहीं बदली है और उपरोक्त समस्याएं अभी भी किसी न किसी रूप में मौजूद हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए, पाठ्यक्रम पर गांधीजी के विचार उपयोगी साबित हो सकते हैं क्योंकि उन्होंने एक बहुत ही व्यावहारिक, व्यापक–आधारित और एकीकृत पाठ्यक्रम का सुझाव दिया, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और जैविक रूप से ध्वनि है। उन्होंने उन गतिविधियों की सिफारिश की, जो रचनात्मक और उत्पादक हैं। गांधीजी के अनुसार पाठ्यचर्या गतिशील, लचीली और विविध होनी चाहिए। यह बच्चे की स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, शिल्प–केंद्रित, बल्कि व्यावसायिक होना चाहिए। एनसीएफ (2005) ने यह भी सुझाव दिया कि प्रारंभिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का शिक्षार्थी के जीवन से घनिष्ठ संबंध होना चाहिए।

शिक्षण के तरीकों के संबंध में मुख्य निष्कर्ष

वर्तमान परिस्थितियों में, शिक्षण के तरीके आनंददायक नहीं हैं और पूरी शिक्षण सीखने की प्रक्रिया बच्चों की ओर से बोझिल और कठिन हो जाती है जो अंततः कई मामलों में उनके छोड़ने की ओर ले जाती है। यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) ने जोर देकर कहा कि स्कूली बच्चों पर कोई शैक्षणिक बोझ नहीं होना चाहिए और शिक्षण के लिए बाल–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने का सुझाव दिया। दूसरी ओर गांधीजी ने शिक्षण के व्यावहारिक तरीकों की वकालत की। उन्होंने वकालत की कि शिक्षक को पढ़ाते समय बच्चे के मनोविज्ञान को ध्यान में रखना चाहिए। बच्चे को जबरदस्ती कुछ भी नहीं सिखाया जाना चाहिए। उसे सिखाई गई हर चीज में उसकी दिलचस्पी होनी चाहिए। उन्होंने सीखने पर भी जोर दिया और शिक्षण में सहसंबंध के तरीकों की सराहना की जहां विभिन्न विषयों को सहसंबद्ध ज्ञान के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए न कि अलग–अलग विषयों के रूप में। वह किताबी के पक्ष में नहीं थे ज्ञान और शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाने का सुझाव दिया। बेसिक शिक्षा की उनकी योजना इसमें प्रयोग के विचारों, शिक्षण की परियोजना पद्धति और भागीदारी के माध्यम से सीखने को जोड़ती है। बच्चे को शिक्षा एक नाटक की तरह दिखाई देनी चाहिए और खेल को शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए। ऐसा करने के साधन, उन्होंने कहा, "कार्य, अवलोकन, अनुभव, प्रयोग, सेवा और प्रेम हैं। इनके बिना, पुस्तकों के माध्यम से सीखना छात्र की आध्यात्मिक और तर्कसंगत शक्तियों के विकास में बाधा के रूप में कार्य करता है और उसके शरीर को खराब

करता है। गांधीजी ने वकालत की कि सहकारी गतिविधि, योजना, सटीकता, पहल और सीखने में व्यक्तिगत जिम्मेदारी के सिद्धांत पर जोर दिया जाना चाहिए। विभिन्न सर्वेक्षण अध्ययन जैसे ैम्ट और च्व्ठम् त्मअपेपजमक आदि बच्चों के लिए शिक्षण अधिगम को अधिक रोचक और समृद्ध बनाने की आवश्यकता पर बल देते हैं। दसवीं और ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजनाओं (2002–2007 और 2007–2012) ने भी बाल–केंद्रित तरीकों को अपनाने और शैक्षणिक सुधार पर ध्यान केंद्रित किया।

शिक्षकों की भूमिका के संबंध में मुख्य निष्कर्ष

वर्तमान समय में शिक्षकों के संबंध में प्रारंभिक शिक्षा के सामने विभिन्न समस्याएं हैं। शिक्षकों की अनुपस्थिति, शिक्षकों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, उच्च छात्र–शिक्षक अनुपात, महिला शिक्षकों की कमी, बच्चों के प्रति मैत्रीपूर्ण रवैया और नैतिक चरित्र की कमी कुछ उभरती हुई समस्याएं हैं जिन्हें सुधार में प्रमुख बाधाओं के रूप में पहचाना गया है। भारत में प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता उपर्युक्त समस्याओं की पृष्ठभूमि में शिक्षकों के बारे में गांधी जी के विचार बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल और उपयुक्त वातावरण प्रदान करने में लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। गांधीजी ने शिक्षकों के गुणात्मक पहलुओं पर अत्यधिक जोर दिया। उन्होंने छात्रों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक को एक अनूठी और महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी। एसीसी उसके लिए, शिक्षक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक होना चाहिए और अहिंसा और सत्य के सामाजिक दृष्टिकोण और आदर्शों से प्रेरित होना चाहिए। उन्होंने हमेशा महसूस किया कि विद्यार्थियों के लिए सच्ची पाठ्यपुस्तक उनके शिक्षक हैं और शिक्षक का काम व्याख्यान कक्ष के अंदर की तुलना में अधिक बाहर है। गांधीजी के दर्शन के अनुरूप, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) ने जोर देकर कहा कि शिक्षक शिक्षा को स्कूल प्रणाली से उभरती मांगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए और इसे शिक्षक को विभिन्न भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के लिए तैयार करना चाहिए, क्योंकि शिक्षक प्रमुख व्यक्ति है जो इसे विकसित कर सकता है। कई बाधाओं के बावजूद छोटे बच्चों में सभी आवश्यक मूल्य।

शिक्षकों के चयन के संबंध में गांधीजी का विचार था कि शिक्षकों का चयन करते समय विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए और जोर देकर कहा कि केवल सही प्रकार के शिक्षक ही शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। उनके विचार में एक शिक्षक में ज्ञान, कौशल, उत्साह, देशभक्ति, मजबूत चरित्र, विशेष प्रशिक्षण और सेवा की भावना होनी चाहिए। उसे स्वयं इन गुणों का अभ्यास करना चाहिए और छात्रों के साथ हृदय से हृदय संपर्क स्थापित करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें छात्रों के दिमाग के बजाय उनके दिलों को तराशना है। एसीसी गांधीजी के अनुसार, बच्चों में मूल्यों को विकसित करने के लिए शिक्षकों को अपने आचरण और व्यवहार के बारे में सावधान रहना होगा। स्वस्थ शिक्षा के निर्माण के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता एक अनिवार्य शर्त है।

मूल्यांकन के तरीकों के संबंध में मुख्य निष्कर्ष

भारत में, प्रारंभिक स्तर पर मूल्यांकन प्रणाली शिक्षा के उद्देश्यों और उद्देश्यों के अनुरूप नहीं है। मूल्यांकन प्रणाली छात्र के व्यक्तित्व के शैक्षिक और गैर–शैक्षिक पहलुओं को ध्यान में नहीं रखती है और इस प्रकार यह एकतरफा मामला बन जाता है। मूल्यांकन प्रणाली मुख्य रूप से परीक्षा उन्मुख है, पाठ्यपुस्तकों से रटकर सीखने पर अधिक जोर दिया जाता है, और इस प्रकार बाल व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण आयामों को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया जाता है। इस महत्वपूर्ण समस्या को सुलझाने के लिए गांधीजी के विचार शिक्षा के उद्देश्यों को साकार करने के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। एसीसी उसके लिए, कोई बाहरी परीक्षा आयोजित करने की आवश्यकता नहीं है। बेसिक स्कूल कोर्स के अंत में आंतरिक परीक्षा के आधार पर स्कूल छोड़ने का प्रमाण पत्र दिया जाना चाहिए। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में प्रोन्नति स्कूलों द्वारा आंतरिक परीक्षाओं के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए। उनका विचार था कि विभिन्न शैक्षिक और गैर–शैक्षिक क्षेत्रों में उनके प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थियों का निरंतर मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन पर गांधीजी के विचारों के अनुरूप, सरकार। आरटीई अधिनियम 2009 के माध्यम से, मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव किए हैं और बाहरी परीक्षा को पूरी तरह से खारिज कर दिया गया है और सीसीई ने इसकी जगह ले ली है लेकिन सीसीई का कार्यान्वयन मौजूदा जमीनी हकीकत में काफी मुश्किल है। अतः इसमें आवश्यक परिवर्तन कर इसे सही भावना से लागू करने की आवश्यकता है।

शिक्षण के तरीकों के संबंध में प्रासंगिकता

गांधीजी ने शिक्षण के व्यावहारिक तरीकों की वकालत की। उन्होंने सीखने पर जोर दिया और शिक्षण में सहसंबंध के तरीकों की सराहना की, जहां विभिन्न विषयों को सहसंबद्ध ज्ञान के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए, न कि अलग–अलग विषयों के रूप में। वह किताबी ज्ञान के पक्ष में नहीं थे और उन्होंने शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाने का सुझाव दिया। गांधीजी आगे कहते हैं, "लड़कों और लड़कियों को किताबों से लदे स्कूल जाते देखना दयनीय है, जिसे वे ले जाने में असमर्थ हैं। पूरे सिस्टम की पूरी तरह से जांच करने की जरूरत है।"

गांधीजी पारंपरिक शिक्षा की साहित्यिक और सैद्धांतिक प्रकृति की आलोचना करते हैं। शिक्षक और सिखाए गए के बीच कोई घनिष्ठ संबंध नहीं है और शिक्षण के तरीके आमतौर पर निष्क्रिय और मौखिक होते हैं। एसीसी उनके लिए शिक्षा बाल केंद्रित होनी चाहिए। उन्होंने इस बात की वकालत की कि शिक्षक को बच्चे के मनोविज्ञान को ध्यान में रखना चाहिए और बच्चे को जबरदस्ती कुछ भी नहीं सिखाया जाना चाहिए। उसे सिखाई गई हर चीज में उसकी दिलचस्पी होनी चाहिए। बच्चे को शिक्षा एक नाटक की तरह दिखाई देनी चाहिए और इसे शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए। ऐसा करने के साधन, उन्होंने कहा, "कार्य, अवलोकन, अनुभव, प्रयोग, सेवा और प्रेम हैं। इनके बिना, पुस्तकों के माध्यम से सीखना छात्र की आध्यात्मिक और तर्कसंगत शक्तियों के विकास में बाधा के रूप में कार्य करता है और उसके शरीर को भी खराब करता है। " गांधीजी ने वकालत की

कि सहकारी गतिविधि, योजना, सटीकता, पहल और सीखने में व्यक्तिगत जिम्मेदारी के सिद्धांत पर जोर दिया जाना चाहिए।

गांधीजी द्वारा विभिन्न विषयों की बुनियादी अवधारणाओं को समझने के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण के समन्वय के लिए बुनियादी शिल्प की शुरुआत की गई थी, साथ ही वे लोगों के बीच श्रम की गरिमा के विचार को विकसित करना चाहते थे, जिसे लोग छोटे काम के रूप में देखना शुरू करते हैं। उनके अनुसार, शिक्षा की एक प्रणाली जिसमें एक शिल्प केंद्र होता है, मन और आत्मा के उच्चतम विकास की ओर ले जा सकता है। बेसिक शिक्षा की उनकी योजना इसमें प्रयोग के विचारों, शिक्षण की परियोजना पद्धति और भागीदारी के माध्यम से सीखने को जोड़ती है। उनका विचार था कि छात्रों को समूहों में काम करने और समूह परियोजनाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए ताकि उनमें समूह जीवन और सहकारी कार्य के लिए आवश्यक गुण विकसित हो सकें। उन्होंने आगे कहा, "शिक्षक द्वारा प्रश्न–उत्तर की तकनीक को अपनाकर विषय को रोचक बनाया जा सकता है और इससे समझने की शक्ति दृढ़ हो जाती है।" इतिहास, भूगोल, अंकगणित, विज्ञान, भाषा, संगीत, चित्रकला आदि जैसे सभी विषयों को शिल्प के साथ जोड़ा जाना चाहिए और शिल्प को स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए और स्थानीय पर्यावरण के अनुरूप चुना जाना चाहिए। शिक्षा आयोग (1964–66) ने भी इस बात पर जोर दिया कि कार्य अनुभव को सभी शिक्षा सामान्य या व्यावसायिक के अभिन्न अंग के रूप में पेश किया जाना चाहिए।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा ही प्रगति, विकास, परिवर्तन और स्थिरता का साधन है। यह अतीत से अनुभव लेता है, वर्तमान से ज्ञान लेता है और भविष्य को सुंदर बनाने की कोशिश करता है। यह बुद्धि को तेज करता है, दृ ष्टि को विस्तृत करता है, मनुष्य के स्वस्थ और संतुलित विकास में मदद करता है और सबसे बढ़कर, यह एक राष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास की ओर ले जाता है। शिक्षा केवल आर्थिक लाभ के संदर्भ में योगदान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि गरीबी में कमी, आय वितरण में सुधार, स्वास्थ्य और पोषण के निहितार्थ के साथ बहुत व्यापक प्रभाव है। लोकतांत्रिक देश की प्रगति, समृद्धि और विकास ज्यादातर जनता की शिक्षा पर निर्भर करता है। इसलिए, जाति, पंथ, रंग, लिंग, नस्ल या क्षेत्र की परवाह किए बिना सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

भारतीय राष्ट्रीय धारणा में 6–14 आयु वर्ग में प्रारंभिक शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है। प्रारंभिक शिक्षा की एक सुनियोजित और उचित रूप से कार्यान्वित प्रणाली बच्चे के सांस्कृतिक, भावनात्मक, नैतिक, बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की उचित नींव रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी एक सांस्कृतिक भूमिका है, जो संवेदनशीलता और धारणाओं को परिष्कृत और पुनर्परिभाषित करती है और राष्ट्रीय एकता में योगदान करती है। प्राथमिक शिक्षा को बेहतर पारिवारिक स्वास्थ्य और धीमी जनसंख्या वृद्धि के लिए जाना जाता है। यह व्यक्ति में तकनीकी

परिवर्तन का लाभ उठाने की क्षमता पैदा करता है, जिससे उत्पादकता और आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है। अध्ययनों ने स्पष्ट रूप से स्थापित किया है कि जिन देशों ने प्रारंभिक शिक्षा के लिए पर्याप्त प्रावधान किए हैं, वे अपर्याप्त प्रावधान वाले देशों से बहुत आगे हैं। इस संदर्भ में, यह याद रखना चाहिए कि विकसित देशों में लगभग 99 प्रतिशत आबादी की प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच है।

साहित्य की समीक्षा

शोधकर्ता के लिए संबंधित साहित्य की समीक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। एक अन्वेषक को अतीत में अध्ययन के क्षेत्र में किए गए नए शोधों के बारे में पता होना चाहिए और तभी वह मूल में कुछ योगदान करने की स्थिति में होता है। संबंधित अध्ययनों की समीक्षा के माध्यम से ही शोधकर्ता उस कार्य को जानता है जो पहले ही एक समयावधि में किया जा चुका है। वह अछूते या बेरोज़गार क्षेत्र को जानता है और सभी पहलुओं में विषय या अध्ययन के दायरे का विचार रखता है।

गुड (2020) को उद्धृत करने के लिए, संबंधित साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन के बिना अन्वेषक अंधेरे में टटोल रहा होगा और शायद बेकार में, पहले से किए गए काम को दोहराएं। इसलिए, समय, ऊर्जा और संसाधनों को बचाने के लिए, सभी उपलब्ध साहित्य का विस्तृत और गहन अध्ययन करना आवश्यक है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा न केवल क्षेत्र में किए गए कार्य की मात्रा के संबंध में एक मार्गदर्शक पद के रूप में कार्य करती है, बल्कि हमें अनुसंधान के संबंधित क्षेत्र में अंतराल और कमी को समझने में भी सक्षम बनाती है। अन्वेषक का विश्लेषण और ऐसे संसाधनपूर्ण अध्ययनों की समीक्षा एक प्रोत्साहन के रूप में काम करती है जो अन्वेषक को नए विचारों, सिद्धांतों, स्पष्टीकरणों या परिकल्पना प्रदान करने के लिए अधिक विस्तार और समस्याओं की व्यापक प्रयोज्यता में धकेलती है। अच्छी टिप्पणियाँ, यह सुझाव दिया जा सकता है कि जिस तरह से अध्ययन तुलनीय हैं, जिसमें वे एक दूसरे से संबंधित हैं, यह खोजना अधिक महत्वपूर्ण समस्या है।

गुड (2020) आगे टिप्पणी करता है "संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा प्रदान किया गया अभिविन्यास जांच की आवश्यकता का सीधा बयान देने में सहायक है।" संबंधित साहित्य की समीक्षा समस्या और उसके महत्वपूर्ण पहलुओं की अधिक समझ को बढ़ावा देती है और अनावश्यक दोहराव से बचना सुनिश्चित करती है। किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान करने के लिए, पहले किए गए अध्ययनों का लाभ उठाने के लिए पुस्तकालय और उसके कई स्रोतों से पूर्ण परिचित होने के लिए शोध कार्य की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक शोध परियोजना प्रासंगिक सोच और उचित योजना और प्रक्रिया पर आधारित होनी चाहिए। जब एक नया शोध प्रासंगिक सोच और उचित योजना और प्रक्रिया पर आधारित नहीं होता है, जब एक नया शोध साहित्य की समीक्षा के माध्यम से आधारित नहीं होता है, तो यह एक अलग इकाई बन जाता है, जो पहले किए गए कार्यों के लिए सर्वोत्तम आकस्मिक प्रासंगिकता पर आधारित होता है। पहले के प्रयोगों की खोज नए कार्यों को शिक्षा में उपयोगी परियोजना को महत्व देने के लिए

प्रोत्साहित करती है, और अनुसंधान कार्यकर्ता पिछली गलतियों और प्रक्रिया में दोषों से बचने में सक्षम है।

यह अध्याय वर्तमान अध्ययन के लिए प्रासंगिक उपलब्ध साहित्य की समीक्षा के लिए समर्पित है। प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जिसका अध्ययन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ने की संभावना ळें

शिक्षा की अवधारणा

जैसा कि उन्होंने कहा, गांधीजी ने शिक्षा के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया; शिक्षा का उद्देश्य स्कूल में प्रत्येक बच्चे की पूरी क्षमता का विकास करना होना चाहिए, हमेशा उस समुदाय की सामान्य भलाई के अनुसार जिसका वह सदस्य है। गांधीजी का शिक्षा दर्शन सामाजिक पुनर्निर्माण का एक संपूर्ण कार्यक्रम है जो भारतीय समाज की सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में व्यक्तियों और समाज की आवश्यकताओं को उचित रूप से संबोधित करता है। उनका विचार था कि शिक्षा को दैनिक जीवन के हर पहलू को छूना चाहिए और प्रत्येक पुरुष और महिला को अपने गांव का बेहतर नागरिक बनने में मदद करनी चाहिए, और इसलिए भारत और दुनिया का बेहतर नागरिक बनना चाहिए।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा क्या है? इसका जवाब हमारे पास उन्हीं के शब्दों में है। "शिक्षा से", गांधीजी कहते हैं, "मेरा मतलब बच्चे और मनुष्य–शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ को चित्रित करना है। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न ही शुरुआत। यह एक ऐसा माध्यम है जिससे स्त्री और पुरुष को शिक्षित किया जा सकता है। साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है।" एक स्कूल में साहित्यिक प्रशिक्षण शिक्षा के व्यक्तित्व के बजाय उपकरणों और विषयों पर अधिक जोर देता है जो गांधीजी के अनुसार शिक्षा का मुख्य सरोकार है। "सर्वश्रेष्ठ से बाहर निकलना" से गांधीजी का क्या अर्थ है? यह सर्वश्रेष्ठ कुछ और नहीं बल्कि सत्य की आंतरिक आवाज है। शिक्षा जो सर्वोत्तम या सत्य को बाहर निकालती है, वह है आत्मा की संगत जागृति के साथ मन और शरीर का विकास। इसलिए शिक्षा का कार्य मानव व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का सामंजस्यपूर्ण विकास करना है, अर्थात। शरीर, हृदय, मन और आत्मा। गांधीजी कहते हैं, "सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक संकायों को खींचती और उत्तेजित करती है।" शिक्षा की यह अवधारणा शिक्षा की आधुनिक अवधारणा के अनुरूप है। आधुनिक समय में यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि व्यक्तित्व शरीर, हृदय और मन का गठन करता है, और इसलिए शिक्षा का कार्य मानव व्यक्तित्व के इन सभी पहलुओं का सामंजस्यपूर्ण विकास करना है। यह व्याख्या शायद मानव स्वभाव की अपर्याप्त समझ पर आधारित है, क्योंकि इसने मानव व्यक्तित्व के सबसे महत्वपूर्ण पहलू, अर्थात् आत्मा की उपेक्षा की है। शिक्षा का कोई भी कार्यक्रम जो मानव व्यक्तित्व के इन चार पहलुओं में से एक पर विशेष जोर देता है, शिक्षा के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ है। हमारी शिक्षा प्रणाली की अधिकांश बीमारियाँ, सभ्यता की शुरुआत से, एक पर विशेष जोर देने के लिए खोजी जा सकती हैं। या इन पहलुओं में से अधिक और दूसरों के प्रति उदासीनता। पूरे विश्व में वर्तमान समय की एक

बहुत बड़ी बुराई मानव व्यक्तित्व के आध्यात्मिक पहलुओं की उपेक्षा है। गांधीजी आधुनिक शिक्षा की इस बुराई के खिलाफ विद्रोह करते हैं और मानव व्यक्तित्व के सभी पहलुओं पर जोर देते हैं। इस प्रकार, उनकी शिक्षा की अवधारणा का उद्देश्य आधुनिक शिक्षा की कमियों को दूर करना है और शिक्षा की उनकी परिभाषा किसी भी अन्य की तुलना में अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है।

गांधी जी ने कहा था, "शिक्षा का अर्थ वर्णमाला का ज्ञान नहीं है। इस प्रकार का ज्ञान केवल शिक्षा का साधन है। शिक्षा का तात्पर्य है कि बच्चे को अपने दिमाग और अपनी सभी इंद्रियों का सदुपयोग करना सीखना। साहित्यिक प्रशिक्षण अपने आप में नैतिक ऊंचाई में एक इंच भी नहीं जोड़ता है और चरित्र निर्माण साहित्यिक प्रशिक्षण से स्वतंत्र है। सच्ची शिक्षा कुछ अलग है। मनुष्य तीन घटकों से बना है, शरीर, मन और आत्मा, उनमें से आत्मा मनुष्य में एक स्थायी तत्व है। इसलिए, हम उस शिक्षा को कह सकते हैं जो आत्मा के गुणों को प्रकट करती है।"

यद्यपि शिक्षा पर गांधीजी के विचार व्यापक प्रकृति के हैं, फिर भी उन्होंने 3 आर के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया। उनका विचार था कि यद्यपि तीनों आर के ज्ञान के बिना बहुत अच्छा और उपयोगी कार्य किया जा सकता है, यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम हमेशा इस तरह के ज्ञान के बिना नहीं कर सकते। यह हमारी बुद्धि को विकसित और तेज करता है, और यह हमारी भलाई करने की क्षमता को बढ़ाता है। फिर, स्वयं का सच्चा ज्ञान उन लाखों लोगों के लिए अप्राप्य है जिनके पास ऐसी शिक्षा का अभाव है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि बिना शिक्षा के मनुष्य पशु से दूर नहीं है।

उनके विचार में शिक्षा को दूसरे अर्थों में भी समझा जा सकता है; अर्थात जो कुछ भी शरीर, मन और आत्मा तीनों का पूर्ण या अधिकतम विकास करता है, उसे शिक्षा कहा जा सकता है। आज जो ज्ञान दिया जा रहा है वह शायद मन को थोड़ा विकसित कर सकता है, लेकिन निश्चित रूप से यह शरीर और आत्मा का विकास नहीं करता है। मुझे शरीर के विकास के बारे में भी संदेह है, क्योंकि इसका मतलब यह नहीं है कि दिमाग विकसित हो गया है अगर हमने इसे बहुत सारी जानकारी से भर दिया है। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि हमने अपने दिमाग को शिक्षित कर लिया है। वास्तविक शिक्षा मस्तिष्क को इतने तथ्यों और आंकड़ों से भर देने में नहीं है, न कि कई पुस्तकों को पढ़कर परीक्षा उत्तीर्ण करने में है, बल्कि चरित्र विकसित करने में है। उन्होंने आगे कहा, "वास्तविक शिक्षा को शिक्षित होने के लिए लड़कों और लड़कियों में से सर्वश्रेष्ठ को निकालना होगा। यह कभी भी गलत और अवांछित जानकारी को विद्यार्थियों के सिर में पैक करके नहीं किया जा सकता है। यह एक मृत भार बन जाता है जो उनमें सभी मौलिकता को कुचल देता है और उन्हें मात्र ऑटोमेटा में बदल देता है। "

गांधीजी टिप्पणी करते हैं कि वास्तविक शिक्षा को एक व्यक्ति को अच्छे और बुरे के बीच भेदभाव करने की शक्ति प्रदान करनी चाहिए। उनका मत था कि जो शिक्षा हमें अच्छे और बुरे में भेद करना, एक को आत्मसात करना और दूसरे को छोड़ना नहीं सिखाती, वह मिथ्या नाम है।

शिक्षा का महत्त्व

एक सामाजिक दार्शनिक के रूप में गांधीजी चाहते थे कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास का एक शक्तिशाली माध्यम हो। उनका दृढ़ मत था कि व्यक्तियों के व्यक्तित्व में परिवर्तन के बिना सामाजिक विकास असंभव है। यही कारण था कि उन्होंने शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण और मूल्यों और दृष्टिकोण के परिवर्तन पर अत्यधिक महत्व दिया। उनका यह भी विश्वास था कि आत्मनिर्भरता के प्रयास के बिना कोई भी विकास संभव नहीं है। अतः उनके लिए शिक्षा न केवल व्यक्तित्व परिवर्तन का साधन है बल्कि आत्मनिर्भरता का भी माध्यम है।

गांधीजी ने शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था में अन्याय, हिंसा और असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगाने के साधन के रूप में देखा है। गांधीजी को आधुनिक भारत का एक क्रांतिकारी शैक्षिक विचारक माना जाता है। वह बिना किसी शोषण और नस्लीय भेदभाव के एक स्वतंत्र और जातिविहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने एक संभावित साधन तैयार किया और वह थी शिक्षा। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक पुनर्निर्माण के एक शक्तिशाली साधन के रूप में देखा।

गांधीजी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाना चाहते थे; जनता को शिक्षित करके, वह 'सर्वोदय समाज' के नाम से जाना जाने वाला एक नया समाज स्थापित करना चाहते थे – एक वर्गहीन, जातिविहीन समाज। यह समाज व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित होगा। यह वास्तव में चरित्र निर्माण, सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास का अवसर प्रदान करता है और जीवन की समस्याओं और वास्तविक जीवन स्थितियों के माध्यम से प्रभावी और सफल जीवन जीने की तैयारी करता है।

उन्होंने कहा कि अगर बच्चों को सही तरह का प्रशिक्षण मिले और शिक्षा वह हो जो वास्तव में होनी चाहिए, तो हमें आने वाली पीढ़ी से बड़ी उम्मीदें हो सकती हैं। वर्तमान समय की सामान्य स्थिति इतनी उदास है और अंधेरे में प्रकाश की एकमात्र किरण बच्चों के माध्यम से है, जो हमारी गलतियों और कड़वाहट और ईर्ष्या से लाभ उठाकर दुनिया को इसमें रहने के लिए एक बेहतर जगह छोड़ सकते हैं। एसीसी उनके लिए, "शिक्षा सिर्फ एक साधन है। यदि इसमें सत्यता, दृढ़ता, धैर्य और अन्य गुणों के साथ नहीं है, तो यह बाँझ रहता है, और कभी–कभी अच्छे के बजाय नुकसान करता है। शिक्षा का उद्देश्य पैसा कमाना नहीं है, बल्कि खुद को सुधारना और देश की सेवा करना है। यदि यह उद्देश्य पूरा नहीं होता है, तो यह मान लेना चाहिए कि शिक्षा पर खर्च किया गया धन बर्बाद हो गया है। "

गांधीजी कहते हैं कि हमें तुरंत यह महसूस करना चाहिए कि एक नेक उद्देश्य से शिक्षा में निवेश करने वाला देश कैसे समृद्ध होता है। जब भारतीय बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलेगी तो भारत का सितारा चमकेगा। माता–पिता को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, शिक्षकों को अपनी जिम्मेदारी

का निर्वहन करना चाहिए और विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि केवल साक्षरता ही शिक्षा नहीं है।

गांधीजी ने सामाजिक सुधार और विकास को केवल राजनीतिक विकास और उन्नति से अधिक महत्व दिया। एसीसी उसके लिए एक बुरे समाज में, किसी भी अच्छे नियम की अवधारणा संभव नहीं है। जैसे, उन्होंने किसी भी राजनीतिक क्रांति के साथ–साथ चलने के लिए सामाजिक क्रांति और सुधार की वकालत की। इसमें मुख्य भूमिका शिक्षा की थी। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सभी लोगों के दिल और दिमाग को शुद्ध करना और सभी शोषण और आक्रामकता से मुक्त समाज बनाना था। उनका विचार था कि सही प्रकार की शिक्षा के बिना, समुदाय न केवल पिछड़ा रहेगा, बल्कि उत्तरोत्तर ऐसा होता जाएगा। यह सीखना भी आवश्यक है कि अर्जित ज्ञान का उचित उपयोग कैसे किया जाए। ज्ञान अपने आप में एक साधन मात्र है। इसे अच्छे के लिए, पैसा कमाने के लिए और सार्वजनिक कारणों की सेवा में लगाया जा सकता है। ज्ञान तभी न्यायोचित है जब उसका सदुपयोग हो और लोकहित में उसका प्रयोग हो। अन्यथा, जैसा कि हमने एक बार पहले बताया था और जैसा कि हर कोई स्वीकार करेगा, यह जहर की तरह है।

शिक्षा का अंतिम उद्देश्य

गांधीजी के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति या सत्य की प्राप्ति, अर्थात आत्म–साक्षात्कार शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है। अन्य सभी उद्देश्य जीवन और शिक्षा के इस सर्वोच्च लक्ष्य के अधीन हैं। वह आत्म–साक्षात्कार को जीवन और शिक्षा का योग मानते हैं। यह अंतिम लक्ष्य है जिसके बाद मनुष्य प्रयास करता है।

गांधीजी का विचार है कि सच्ची शिक्षा का परिणाम भौतिक शक्ति में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति में होना चाहिए। इसलिए, वह धार्मिक शिक्षा पर बहुत जोर देते हैं, जो उन्हें लगता है कि बच्चों को सत्य, प्रेम, न्याय और अहिंसा के मौलिक गुणों को सिखाना चाहिए। गांधीजी का मानना है कि यदि मनुष्य का जीवन धर्म के बिना है तो वह अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। गांधीजी के अनुसार ईश्वर को जंगलों में जाकर नहीं, बल्कि समाज में रहकर और उसकी सेवा करके प्राप्त किया जा सकता है। वह छात्रों को भगवान के बाद खोजकर्ता के रूप में बुलाना पसंद करते हैं। गांधीजी के अनुसार ईश्वर के ज्ञान को प्राप्त करने के साधन आत्म–संयम, संयम और चरित्र हैं।

निष्कर्ष

गांधीजी ने शिक्षा की ऐसी योजना बनाकर भारतीय शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसका समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में अभी भी एक विशाल शैक्षिक प्रभाव है। शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में, वह व्यक्ति के सामंजस्यपूर्ण विकास और समग्र रूप से समाज की बेहतरी के लिए शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे। उनके लिए, चरित्र निर्माण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए और वे सभी को मूल्य शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे। वह बच्चों में चरित्र के वांछनीय गुणों जैसे कि आत्म–सहायता,

आत्मनिर्भरता, सहयोग की भावना, मानवता की सेवा, जिम्मेदारी की भावना, परिवेश के प्रति सम्मान और इसी तरह के गुणों को विकसित करने का दावा करता है। शिक्षा के व्यावसायिक पहलू के संबंध में, उनका विचार था कि शिक्षा को बेरोजगारी के खिलाफ एक बीमा होना चाहिए।

गांधीजी अपनी शिक्षा योजना में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं और इन पहलुओं पर उनके विचार प्रारंभिक शिक्षा के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। बाल केंद्रित और जीवन से संबंधित पाठ्यक्रम, गतिविधि आधारित और शिक्षण के आनंदमय तरीके और मां पर उनके विचार

शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा का वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में अपना अनूठा महत्व और उपयोगिता है। इसके अलावा अनुकूल स्कूल वातावरण, सतत और व्यापक मूल्यांकन, आत्म–अनुशासन, एक आदर्श के रूप में शिक्षक और महिलाओं और वयस्क शिक्षा पर तनाव पर उनके विचार वर्तमान समय में कम महत्व के नहीं हैं। निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा, पूर्व–प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने, प्रभावी सामुदायिक भागीदारी, शांति के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण पर जोर देने पर उनके जोर की बेहतर शैक्षिक परिणामों के संबंध में अपनी प्रासंगिकता है।

संदर्भ सूची

- भारत सरकार (2017)। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986', नई दिल्लीः मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- भारत सरकार (2017)। 'प्राथमिक स्तर पर सीखने का न्यूनतम स्तर। शिक्षा विभाग, एमएचआरडी, नई दिल्ली द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की रिपोर्टः भारत सरकार।
- भारत सरकार (2017), 'कार्यक्रम का कार्यक्रम, 2017, नई दिल्लीः एमएचआरडी, भारत सरकार।
- भारत सरकार (2017), 'सर्व शिक्षा अभियान– सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक कार्यक्रम; कार्यान्वयन के लिए ढांचा', प्रारंभिक शिक्षा और साक्षरता विभाग, नई दिल्लीः एमएचआरडी, सरकार। भारत की।
- भारत सरकार (2017)। 'सभी के लिए शिक्षाः राष्ट्रीय कार्य योजना', नई दिल्लीः मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- भारत सरकार (2017)। 11वीं पंचवर्षीय योजना (2017) के लिए प्रारंभिक शिक्षा और साक्षरता पर कार्यकारी समूह की रिपोर्ट, नई दिल्लीः योजना आयोग।
- भारत सरकार (2017), 'चयनित शैक्षिक सांख्यिकी, 2005–06', नई दिल्लीः एमएचआरडी, भारत सरकार।

- भारत सरकार (2017)। 'चयनित शैक्षिक सांख्यिकी, 2007–08', नई दिल्लीः एमएचआरडी, भारत सरकार। भारत सरकार (2017) 'बच्चों का मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009', भारत का राजपत्र, 27 अगस्त, 2017, नई दिल्लीः भारत सरकार।
- गोसाई, एमआर (2017)। 'द रीसेंट राइट टू एजुकेशन एंड द प्रेजेंट स्टेट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन', नई दिल्लीः यूनिवर्सिटी न्यूज, 47(47) 23–29।
- गोविंदा, आर. (सं.) (2017)। 'इंडिया एजुकेशन रिपोर्टः ए प्रोफाइल ऑफ बेसिक एजुकेशन, नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- गोविंदा, आर. और बंद्योपाध्याय, एम. (2017)। एक्सेस टू एलीमेंट्री एजुकेशन इन इंडियाः कंट्री एनालिटिकल रिव्यू', क्रिएट पाथवे टू एक्सेस, रिसर्च मोनोग्राफ, नई दिल्लीः एनयूईपीए।
- गोविंदा, आर. और बिस्वाल, के. (2017)। 'भारत में प्रारंभिक शिक्षाः वादा, प्रदर्शन और संभावनाएं। दसवीं योजना के मध्यावधि आकलन के लिए पृष्ठभूमि पेपर', नई दिल्लीः मानव विकास संसाधन केंद्र, यूएनडीपी।
- गुप्ता, एन.एल. (2017)। 'महात्मा गांधीः एक शैक्षिक विचारक', नई दिल्लीः अनमोल प्रकाशक।
- हेमचंद, टी.के. (2016)। 'प्राथमिक शिक्षा की समस्याएं', क्रिसेंट पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
- हुसैन, एम। (2016)। 'शुरुआती शिक्षा का इतिहास', नई दिल्लीः अनमोल प्रकाशन।
- जैन, एम.के. (2016)। 'समितियाँ और आयोगः प्रारंभिक शिक्षा–चयन दस्तावेज़', दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन।